ISSN- 2350-0530(O) ISSN- 2394-3629(P)
Impact Factor: 2.035 (I2OR)
DOI: 10.29121/granthaalayah.v4.i4.2016.6308

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH – GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository

Social

# REVOLUTION OF 1857 AND CHHATTISGARH
# 1857 ई. की क्रांति और छत्तीसगढ़

**Dr. Pradeep Shukla** [*1]
[*1] Professor, Department of History Guru Ghasidas University, Bilaspur, INDIA

## ABSTRACT

***Third gender to we calls hijras, fa'afafine, sworn virgins or transgender. This community is far away from their identity and main stream of society because we the people of this society only discuss them and we had done a research on it that how our print media covers them. For this we had taken four main newspapers published from Raipur i,e Dainik Bhaskar, Nai Dunia, Haribhoomi and Nava Bharat, And in this research its we had find out that the coverage of this community in these newspapers are nil. The editors of these newspaper thinks that the coverage of the community is low due to low involvement of this community in society whereas this community thinks that they are doing that kind of work which can be a news for media.***

**Keywords:**
*Third gender , Media and Mainstream.*

## शोध सारांश

थर्ड जेंडर समुदाय जिसे हम किन्नर, हिजड़ा, कोथी, ख़ोजा, ट्रांसजेंडर आदि नामों से भी संबोधित करते हैं। उस समुदाय के बारे में हम केवल चर्चा करते है। ऐसे समुदाय को अपनी पहचान के कारण मुख्यधारा से अलग रहना पड़ता हो। जिसकी वास्तविकता को हमे संभावना के आधार पर तय करना पड़ता हो उसी समुदाय को हमारा प्रिंट मीडिया द्वारा कैसे पेश किया जाता है। शोध में रायपुर शहर से प्रकाशित चार अखबारों दैनिक भास्कर, हरिभूमि, नवभारत और नई दुनिया को लिया गया है। शोध में पाया गया की प्रिंट मीडिया में थर्ड जेंडर समुदाय से संबंधित खबरों का अनुपात शून्य होता है। अखबारों के संपादकों द्वारा भी माना गया है की थर्ड जेंडर समुदाय की आबादी का कम होना और उनकी स्वयं सहभागिता की कमी के कारण भी खबर प्रकाशित नहीं हो पाती है। वही समुदाय द्वारा भी माना गया है कि स्वंय उनके समुदाय द्वारा ऐसा कार्य नही हो रहा है जो मीडिया के लिए खबर बन सके है।

**प्रमुख शब्द –** थर्ड जेंडर, मीडिया, मुख्यधारा।

**Cite This Article:** Dr. Pradeep Shukla, "REVOLUTION OF 1857 AND CHHATTISGARH" International Journal of Research – Granthaalayah, Vol. 4, No. 4 (2016): 165-168IJRG25_A08_6309.

ISSN- 2350-0530(O) ISSN- 2394-3629(P)
Impact Factor: 2.035 (I2OR)
DOI: 10.29121/granthaalayah.v4.i4.2016.6308

## 1. प्रस्तावना

भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन की कहानी भारतीयों द्वारा स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए संग्राम का इतिहास है। यह ब्रिटिश सत्ता की गुलामी से मुक्ति पाने के लिए भारतीयों द्वारा संचालित एवं संगठित आन्दोलन है। भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन की शुरुआत वस्तुतः 1885 ई. में कांग्रेस की स्थापना के साथ हुई लेकिन उसके कई वर्षों से ही भारत में अंग्रेजी सत्ता की स्थापना हो चुकी थी। भारत में ब्रिटिश शासन की शुरुआत ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना के साथ हुई।

शुरु में ईस्ट इंडिया कंपनी का उद्देश्य शांतिपूर्ण तरीके से व्यापार करना था। उसने लगभग एक शताब्दी तक शांतिपूर्ण व्यापार के तरीके को अपनाये रखा। ईस्ट इंडिया कंपनी ज्यादा दिनों तक शांतिपूर्ण व्यापार की नीति का अनुसरण न कर सकी। उसने भारत में राजनीतिक झगड़ों में भाग लेना आरंभ कर दिया। कंपनी द्वारा नीति परिवर्तन के दो मुख्य कारण थे। पहला कारण था तात्कालीन भारत की अव्यवस्थित एवं अराजकतापूर्ण स्थित । 1707 ई. में मुगल सम्राट औरंगजेब की मृत्यु के बाद उसके उत्तराधिकारी साम्राज्य को एक सूत्र में वाँध कर नहीं रख सके। आन्तरिक प्रशासन छिन्न-भिन्न हो गया, देश के विभिन्न भागों में फैले शासक, नवाव, सामन्त तथा राजा अपनी-अपनी पृथक सत्ता स्थापित करने लगे, देश टुकड़े में बँट गया।

सन् 1857 ई. में ब्रिटिश सत्ता के विरूद्ध भारतीयों द्वारा पहली बार संगठित एवं हथियार वंद लड़ाई हुई। राष्ट्रीय आन्दोलन के इतिहास में यह पहला संगठित संघर्ष था। यद्यपि वह विप्लव असफल रहा, फिर भी इसके प्राचीन और सामंतवादी परंपराओं को तोड़ने में पर्याप्त सहायता पहुँचायी तथा इसके बाद ही भारत आधुनिक युग में प्रवेश कर सका।

देशव्यापी इस क्रांति का प्रभाव छत्तीसगढ़ की माटी एवं महानदी की घाटी में भी पड़ा था। संबलपुर और सोनाखान के अरण्य क्षेत्र में इसका व्यापक प्रसार हुआ। आदिवासी किसान, मजदूर सामान्य जनता तथा कुछ सैनिकों ने भी इस आंदोलन में भाग लिया जो जेल की सुरक्षा कार्य में संलग्न थे, उनका भी सहयोग मिला।

ईस्ट इंडिया कंपनी के शासन काल में आर्थिक दृष्टि से महानदी की घाटी में अन्याय का बोलबाला था। अंग्रेज एवं भ्रष्ट व्यापारी जनता का शोषण कर रहे थे। छत्तीसगढ़ ''धान का कटोरा'' कहा जाता है, यहाँ का धान उत्तर भारत एवं निजाम राज्य तथा नागपुर की ओर भेजा जाता था।

छत्तीसगढ़ में जनहित कार्य में सोनाखान का जमींदार परिवार तीन पीढ़ियों से लगा हुआ था। 1818-19 में ब्रिटिश एवं मराठों के अन्याय परक नीतियों के विरोध में जमींदार रामराय में विद्रोह किया था। नागपुर से आकर केप्टन मेक्सन ने इसे दबाया था। सोनाखान जमींदारी के गाँवों की संख्या 300 से घटाकर 50 गाँव की कर दी गई थी। रामराय का प्रभाव फिर भी यथावत बना रहा। अंग्रेजों ने स्वयं महसूस किया था कि छत्तीसगढ़ के सूबेदार की अपेक्षा रामराय का आदेश अधिक माना जाता है।

सन् 1830 ई. में रामाराय की मृत्यु हो गयी, उसके पश्चात नारायण सिंह जमींदार बना। नारायण सिंह प्रजावत्सल शासक था, उसके व्यक्तित्व व कार्यों से प्रजा संतुष्ट थी। वीरनारायण का प्रभाव अपनी प्रजा पर ही नहीं था अपितु आस-पास के अन्य जमींदारों पर भी रहा है। डॉ. रमेन्द्र नाथ मिश्रा ने लिखा है- ''महानदी घाटी की जितनी भी जमींदारियाँ थीं, यथा फिंगेश्वर, कटंगी, भटगाँव, बिलाईगढ़, फूलझर, नर्रा, कोमाखान (सुअरगाल) सभी उनका प्रभाव मानते थे।''

सन् 1856 ई. में सोनाखान समेत समूचे छत्तीसगढ़ में भयानक सूखा पड़ा। जिससे चारों ओर भीषण अकाल - की स्थिति हो गई। सोनाखान के गरीब आदिवासियों को कंद मूल, फल और यहाँ तक की पीने के लिए पानी मिलना कठिन हो गया। अकाल से पीड़ित जनता का दुःख-दर्द जमींदार वीरनारायण सिंह द्वारा देखा नहीं जा सका। उसने भूख से पीड़ित किसानों को राहत देने के लिए समीपस्थ गाँव करौद के व्यापारी माखन साव से अनाज का गोदाम खुलवाकर केवल इतना ही अनाज लिया जो उन जरुरतमंद किसानों

ISSN- 2350-0530(O) ISSN- 2394-3629(P)
Impact Factor: 2.035 (I2OR)
DOI: 10.29121/granthaalayah.v4.i4.2016.6308

के लिए आवश्यक था। ''छत्तीसगढ़ के प्रथम शहीद वीरनारायण सिंह'' नामक पुस्तक में लिखा है-''उन्होंने एक जमाखोर व्यापारी द्वारा संग्रह किए गए अनाज का जरुरत के अनुसार बंटवारा करके किसानों में फैली हुई दुर्भिक्ष की पीड़ा को मिटाया।''

उसने जो कुछ किया था, उसके विषय में तुरन्त ही डिप्टी कमिश्नर को अवगत करा दिया था। वीरनारायण सिंह ने 29 अगस्त 1856 को रायपुर स्थित डिप्टी कमिश्नर इलियट को पत्र लिखकर सूचित किया तथा इस प्रकार कार्य करने के कारण भी लिख भेजे। साथ ही साथ उस व्यापारी ने भी अपनी क्षति के विषय में डिप्टी कमिश्नर के पास शिकायत भेजी। इस स्थिति को सहानुभूति पूर्ण ढंग से संभालने की अपेक्षा डिप्टी कमिश्नर ने तुरन्त ही वीरनारायण सिंह के खिलाफ गिरफ्तारी का वारंट जारी किया। एक पुलिस का दल उसके घर भेजा जो कुछ कठिनाइयों के पश्चात् उसे लूट व डकैती के आरोप में बंदी करके रायपुर लाया तथा बंदीगृह में डाल दिया। डिप्टी कमिश्नर इलियट ने नागपुर स्थित कमिश्नर प्लाउडन को सूचित किया कि ''सोनाखान ने जमींदार को पकड़ने के लिए घुड़सवारों की सेना को संबलपुर भेजा गया। उसे 24 अक्टूबर 1856 को बंदी बना लिया गया और उसे तहकीकात के लिए रखा गया है।''

जिस समय वीरनारायणसिंह को गिरफ्तार किया गया उस समय सोनाखान का प्रजावत्सल सहदयी जमींदार धार्मिक प्रयोजन से जगन्नाथपुरी की यात्रा पर थे। उसे रास्ते में 24 अक्टूबर 1856 को संबलपुर में बंदी बनाया गया था।

वीरनारायण सिंह की अन्यायपूर्ण गिरफ्तारी से सोनाखान व आस-पास के क्षेत्रों में व्यापक प्रतिक्रिया हुई। भीतर ही भीतर जनता का रोष सिंचित होने लगा। यही रोष समय आने पर क्रांति रूपी ज्वाला के रूप में फूट पड़ा। वीरनारायण सिंह दस माह तक रायपुर के बंदी गृह में पड़ा रहा और जब मई 1857 में देशव्यापी महान विप्लव प्रारंभ हुआ तो रायपुर की जनता तथा वहाँ के सैनिकों ने उसे अपने संघर्ष को नेता बनाने का निश्चय किया। रायपुर तीसरी रेजीमेंट का मुख्यालय था। देशव्यापी विप्लव की लहर से इस रेजीमेंट के सिपाही भी अछूते नहीं रहे। यहाँ के कुछ सैनिकों ने वीरनारायण सिंह को स्वतंत्रता संग्राम का नेता मानकर उसे जेल से मुक्त करने की योजना बनाई। इस योजना के अंतर्गत जेल की दीवार में सुरंग बनाई गई और 27 अगस्त की रात वीरनारायण सिंह को बंदीगृह से बाहर निकाल दिए गए।

जेल से छूटने के बाद श्री वीरनारायण सिंह सोनाखान पहुंचे और वहाँ उन्होंने अपने नेतृत्व में 500 सैनिकों की एक सेना संगठित की।

श्री वीरनारायण सिंह के जेल से भाग निकलने की सूचना पाकर डिप्टी कमिश्नर बड़े चिंतित हुए। अतः अंग्रेजों की एक सेना स्मिथ के नेतृत्व में सोनाखान के लिये रवाना हुई। मार्ग में अन्य जमींदारों की सेना को सहायता के लिये बुलाकर सैनिक साज-सामान बटोरता हुआ स्मिथ 29 नवंबर को खरोद से सोनाखान के लिये रवाना हुआ। कुछ सेना उसने बिलासपुर से बुलवायी थी। यदि वीरनारायण सिंह इन्हीं दिनों स्मिथ पर आक्रमण कर देता तो उसकी स्थिति मजबूत हो जाती, पर वह ऐसा न कर सका, जो आगे चलकर उसके लिये नुकसानदायक सिद्ध हुआ। स्मिथ देवरी पहुंचा। वहाँ का जमींदार वीरनारायण सिंह का खानदानी दुश्मन था। वहाँ रहकर स्मिथ ने ऐसी व्यवस्था की, जिससे सोनाखान को युद्ध के समय कहीं से बाहरी सहायता न मिल सके। उसने 1 दिसम्बर को देवरी से सोनाखान के लिये प्रस्थान किया। देवरी के जमींदार अंग्रेजी सेना का पथ-प्रदर्शन कर रहे थे। सोनाखान से तीन फर्लांग पहले एक नाले के समीप वीर नारायण सिंह की सेना ने स्मिथ की सेना पर आक्रमण कर दिया। यहाँ पर दोनों सेनाओं के बीच घमासान युद्ध हुआ। प्रारंभिक विफलता के बाद बाहरी सहायता मिलने के कारण स्मिथ की स्थिति सम्हल गयी और वह अपनी सेना के साथ आगे बढने लगा। वीर नारायण सिंह की सेना पीछे हटने लगी। दोपहर को अंग्रेजी सेना सोनाखान की बस्ती में घुस आयी और उसने खाली गाँव में आग लगवा दी। सोनाखान बूरी तरह से जल गया। 2 दिसम्बर को कटंगी की फौज स्मिथ से जा मिली। दोपहर भोजन के पश्चात स्मिथ उस पहाडी की ओर चला जहाँ वीर नारायण सिंह अपनी सेना के साथ तैयार था। स्मिथ की बडी सेना ने उक्त पहाड़ को चारों ओर से घेर लिया। दोनों ओर से गोलियाँ चलती रहीं। अंत में श्री वीर नारायण गिरफ्तार कर लिये गये और उन्हें पुनः रायपुर जेल में डाल दिया गया। वीर नारायण सिंह पर देशद्रोह का मुकदमा चलाया गया। 10 दिसम्बर सन् 1857 ई. को वीर नारायण सिंह को जय स्तम्भ चैक पर प्राणदण्ड दिया

ISSN- 2350-0530(O) ISSN- 2394-3629(P)
Impact Factor: 2.035 (I2OR)
DOI: 10.29121/granthaalayah.v4.i4.2016.6308

गया। इस प्रकार देश के स्वाधीनता आन्दोलन में छत्तीसगढ का यह प्रथम सेनानी शहीद हो गया। वह एक आदिवासी वीर था। जयस्तम्भ चैक आज भी वीर नारायण सिंह का यशगान करते हुए स्थित हैं।

**हनुमान सिंह की वीरता:-** मैग्जीन लश्कर श्री हनुमान सिंह ने विद्रोह के दौरान छत्तीसगढ़ के इतिहास में जिस वीरता का परिचय दिया, इससे उनका नाम सदैव अविस्मरणीय रहेगा। यहाँ होने वाले विद्रोह को कुशल नेतृत्व प्राप्त हुआ होता तो यहाँ भी कुछ ऐसी असाधारण घटना होती जो इतिहास में सदैव अमर होती। इस सिलसिले में हनुमान सिंह द्वारा किया गया कृत्य बड़ा प्रेरणास्पद है, जिसने इस क्षेत्र की सेना में विद्रोह की चिंगारी उत्पन्न कर दी पर रायपुर के अधिकारी अंदर सुलगने वाली इस आग से अनभिज्ञ थे। वे इस बात का अनुमान नहीं लगा सके कि छत्तीसगढ़ के समान शांत क्षेत्र भी विद्रोह के लिये उठ खड़ा होगा। यही कारण था कि इस समय रायपुर का डिप्टी कमिश्नर मुख्यालय में नहीं था।

18 जनवरी सन् 1858 ई. को 7.30 बजे शाम को श्री हनुमान सिंह ने तीसरी टुकड़ी के सार्जेण्ट मेजर श्री सिडवेल की उसके घर में घुसकर हत्या कर दी। इस घटना से रायपुर में विद्रोह का शुभारंभ हुआ। हत्या करने के उपरांत उसने पुलिस शिविर के सिपाहियों को संबोधित करते हुए उन्हें इस विद्रोह में भाग लेने का आव्हान किया। इसके जवाब में सरकारी सेना ने सिपाहियों को विद्रोहियों का साथ छोड़ने की चेतावनी दी। लेफ्टिनेंट सी. बी. एल. स्मिथ ने विद्रोहियों को नियंत्रित करने का प्रयास किया। विद्रोही सिपाहियों की संख्या 17 बतलायी गयी। उन पर मुकदमा चला और वे अपराधी सिद्ध हुए। उन्हें 22 जनवरी सन् 1858 ई. को सुबह पूरी सेना के सामने फाँसी दे दी गयी। इस गदर में अंचल के 17 लोग शहीद हुये ।

फाँसी देने के साथ-साथ इनकी सारी संपत्ति भी जब्त कर ली गयी। इस विद्रोह में सभी जाति और धर्म के लोग शामिल थे, जो इस बात को प्रमाणित करती है कि अंचल में राष्ट्रीय हित की भावना सर्वोपरि थी।

श्री हनुमान सिंह ने इस विद्रोह का नेतृत्व किया। घटना के बाद वह फरार हो गया, उसे पकड़ने के लिये सरकार ने अथक प्रयास किया। वह राजपूत जाति का था और उसकी अवस्था लगभग 35 वर्ष की थी। वह तन्दुरूस्त अच्छी काठी और रोबदार मूंछोंवाला व्यक्ति था।

वह आतंकी प्रवृत्ति का व्यक्ति था और बैसवारा का रहने वाला था। विद्रोहियों ने 6 घंटे तक लगातार संघर्ष किया, पर लेफ्टिनेंट स्मिथ और अन्य अधिकारियों तथा सरकारी सिपाहियों के सहयोग से उनका विद्रोह दबा दिया गया। हनुमान सिंह को पकड़ने के लिये सरकार की ओर से 500 रुपये का इनाम घोषित किया गया। ऐसी संभावना व्यक्त की गयी थी कि श्री हनुमान सिंह अन्य ब्रिटिश अधिकारियों जैसे- स्मिथ, इलियट आदि को भी मार डालने का प्रयास करेगा, पर वह सफल न हो सका। इस घटना के बाद से हनुमान सिंह की कोई सूचना नहीं मिली। शासन पूरी तरह से सचेष्ट हो गया। कुछ समय बाद स्थिति शांत होने के कारण विद्रोह की संभावना नहीं रही। इस प्रकार श्री हनुमान सिंह का प्रयास यद्यपि असफल कर दिया गया, तथापि उसके द्वारा प्रदर्शित पराक्रम की प्रशंसा ही की जायेगी।